|| श्री सूर्य चालीसा ||

|| श्री गणेशाय नमः ||

|| दोहा ||

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अंग ।
पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के संग ॥

|| चौपाई ||
जय सविता जय जयति दिवाकर । सहस्त्रांशु सप्ताश्व तिमिर हर ॥
भानु पतंग मरीची भास्कर । सविता हंस सुनूर विभाकर ॥

विवस्वान आदित्य विकर्तन । मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥
अंबर मणि खग रवि कहलाते । वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥

सहस्त्रांशु प्रद्योतन कहिकहि । मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥
अरुण सदृश सारथी मनोहर । हांकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥

मंडल की महिमा अति न्यारी । तेज रूप केरी बलिहारी ॥
उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते । देखि पुरन्दर लज्जित होते ॥

मित्र मरीचि भानु अरुण भास्कर । सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥
पूषा रवि आदित्य नाम लै । हिरण्य गर्भाय नमः कहिकै ॥

द्वादश नाम प्रेम सोंम गावैंम । मस्तक बारह बार नवावैं ॥
चार पदारथ जन सो पावै । दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावै ॥

नमस्कार को चमत्कार यह । विधि हरिहर को कृपासार यह ॥

सेवै भानु तुमहिं मन लाई । अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥

बारह नाम उच्चारन करते । सहस जनम के पातक टरते ॥
उपाख्यान जो करते तवजन । रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥

धन सुत जुत परिवार बढ़तु है । प्रबल मोह को फंद कटतु है ॥
अर्क शीश को रक्षा करते । रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत । कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥
भानु नासिका वास करहु नित । भास्कर करत सदा मुखको हित ॥

ओंठ रहैं पञ्च जन्य हमारे । रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा । तिग्म तेजसः कांधे लोभा ॥

पूषां बाहू मित्र पठी पर । त्वष्टा वरुण रहम संष्णाकर ॥
युगल हाथ पर रक्षा कारण । भानुमान उर सर्म सु उद रचन ॥

बसत नाभि आदित्य मनोहर । कटिमहहान्स रहत मन मुदभर ॥
जंघा गोपति सविता बासा । गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥

विवस्वान पद की रखवारी । बाहर बसते नित तम हारी ॥
सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै । रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥

अस जोजन अपने मन माहीं । भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं ॥
दरिद्र कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै । योजन याको मन मह जापै ॥

अंधकार जग का जो हरता । नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥
ग्रह गण ग्रसि न मिटावत जाही । कोटि बार मैं प्रनवौं ताही ॥

मंद सदृश सुत जग में जाके । धर्मराज सम अद्भुत बांके ॥
धन्य धन्य तुम दिनमनि देवा । किया करत सुरमुनि नर सेवा ॥

भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों । दूर हटतसो भवके भ्रम सों ॥
परम धन्य सों नर तनधारी । हैंम प्रसन्न जेहि पर तम हारी ॥

अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन । मधु वेदांग नाम रवि उदयन ॥
भानु उदय बैसाख गिनावै । ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥

यम भादों आश्विन हिमरेता । कार्तिक होत दिवाकर नेता ॥
अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं । पुरुष नाम रवि हैं मलमा सहिं ॥

॥ दोहा ॥
भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य ।
सुख सम्पत्ति लहै विविध, होंहिं सदा कृतकृत्य ॥

॥ इति श्री सूर्य चालीसा सम्पूर्णम ॥